International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 30-08-2024, Accepted: 29-09-2024, Published: 14-10-2024
Volume 10, Issue 4, 2024, Page No. 9-12

डॉ० गोरख प्रसाद मस्ताना की हिंदी कविताओं की भाषा शैली

घनश्याम प्रसाद, डॉ० बज्रांग प्रताप केसरी
[1] शोधार्थी, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, बिहार, भारत
[2] शोध निर्देशक, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, बिहार, भारत

सारांश
डॉ० गोरख प्रसाद मस्ताना समकालीन हिन्दी कविता के एक प्रमुख हस्ताक्षर हैं। उन्होंने अपनी हिन्दी कविताओं, अपने गीतों, अपनी मुक्त छंद की कविताओं, अपने खण्डकाव्य एवं महाकाव्यों की रचना करके समकालीन हिन्द कविता के परिदृश्य को समृद्ध किया है।
डॉ० गोरख प्रसाद मस्ताना की काव्य–भाषा सौंदर्ययुक्त है, उसमें लय है, गति हैं, वैज्ञानिकता है। उनकी भाषा शैली के विविध रूप हैं, जो विषय के अनुकूल अपनी शब्दावली और वाक्य–विन्यास बदलते रहते है।

मूल शब्दः संगमरमरी महल, यामिनी, चितवन, मलयगिरि मनुहार, क्षितिजांगन, चमत्कार, चपला

कविता अंततः शब्द ही है। शब्दों की रंगोली सजाने के लिए एक शैली भी आवश्यक है। अतः कविता के लिए भाषा शैली का बड़ा ही महत्व है।
डॉ० गोरख प्रसाद मस्ताना की कविताओं की भाषा शैली बड़ी ही अच्छी है। उनकी कविताओं में शब्दों का चयन बड़ा ही सुंदर और सटीक होता है। वाक्य विन्यास बहुत सुगठित होता हैं। उदाहरण के लिए–

आंसू की खेती होती है, मेरी चारदीवारी में
जीवन को जीना पड़ता है, जीने की लाचारी में
धरती का श्रृंगार आदमी
सुरभित मलय बयार आदमी
नील गगन का प्यार आदमी
प्रकृति का उपहार आदमी
यही आदमी काट रहा है एक–एक पल दुश्वारी में[1]
(गीत मरते नहीं–राग दरबारी–पृष्ठ संख्या–11)

डॉ० गोरख प्रसाद मस्ताना की एक कविता ''चाह'' देखी जा सकती हैं। इसमें वे इस तरह के शब्दों का चयन करते हैं कि बिंब पूरी तरह साकार हो जाते हैं। इसमें संगमरमरी महल थोड़ा सा विश्राम,गोरे तन की सुबह, मन की सुरमयी शाम, नीले दृग दर्पण, स्नेह के दो आधार, मन की कुंज गली, जैसे शब्दों और पदों का प्रयोग कितना सुंदर बन पड़ा है:–

अपने संगमरमरी महल में थोड़ा सा विश्राम मुझे दो
गोरेतन की सुबह, सुहानी मन की सुरमयी शाम मुझे दो
नीले दृग दर्पण में तेरे झाँकू
भाग्य सँवारू अपना
स्नेह का दो आधार
करूँ साकार युगों का सुन्दर सपना
अपने मन की कुँज गली में रहने आठों याम मुझे दो[2]
(गीत मरते नहीं–चाह–पृष्ठ संख्या–21)

डॉ० गोरख प्रसाद मस्ताना की कविताओं में तत्सम शब्द भी बडे सहज ढंग से प्रयुक्त हुए हैं जैसे रस, अधर, अलंकार, श्लोक, चितवन, कालिंदीं, शुभ्र, स्वछंद, निर्मल प्राणतंत्र, मलयगिरी चंदन इत्यादि।

रस है अघर छन्द सी आँखे अलंकार सा तन है रे
पद्मावत सी प्रिया तिहारो वृन्दावन सा मन है रे
नयन तुम्हारे श्लोक सरिस है भावों में गंगाजल है
चितवन कालिंदी का तट है शुभ्र स्वच्छ औं निर्मल है
प्राण तन्त्र साँसो में तेरे मलयागिरि चंदन है रे[3]
(गीत मरते नहीं–रूप चंदन–पृष्ठ संख्या–64)

डॉ० गोरख प्रसाद मस्ताना के गीतों में तद्भव शब्दों की छटा भी दिखाई देती है। जैसे:–पुरवाई, अंगडाई, मुस्काए अमीय इत्यादि।

पुरवाई अंगड़ाई ज्यो पाती
प्राच्य दिशा के सूदूर समद से
असित सघन घन लाती, गाती पुरवाई
ऋतुरानी सोलह श्रृंगार कर चपला संग मुस्काए
मेघों के स्यन्दन पर चढ़कर झूम झूम कर गाए
अमीय सरस शीतल बूंदों से बसुधा को बहलाती, जाती,पुरवाई।[4]
(गीत मरते नहीं–पुरवाई–पृष्ठ संख्या–65)

डॉ० मस्ताना अपने गीतों में तत्सम और तद्भव शब्दों का प्रयोग एक साथ इतनी कुशलता से करते हैं कि शब्द सौंदर्य देखते ही बनता है।

वसुधा के आँचल में छिपकर प्यार चुरा लूं मैं
मधुमय बंसत का थोड़ा उपहार चुरा लूं मैं
उत्पल का सौंदर्य गुलाबी पारिजात की सुषमा
गुलमोहर से ले लूं आनन पर ललित एक गरिमा
तेरे हृदय निकेतन से मनुहार चुरा लूं मैं।[5]
(गीत मरते नहीं–मधुसार चुरा लूं मैं–पृष्ठ संख्या–68)

डॉ० गोरख प्रसाद मस्ताना अपनी रचनाओं में शब्दों का नए अर्थों में प्रयोग करते हैं जिससे रचनाओं में एक अभिनव सौंदर्य उभर आता है। उदाहरण:–

उषा रानी को रेशम की, डोरी धरे उतरते देखा
सुभग रश्मियों से नख सिख तक सजते और सँवरते देखा ।
क्षितिजाँगन में क्रीड़ा किलोलें आलिंगन अँगडाई
ताल सरोवर जागे, जागी कुक भरी अमराई
अपने नील नयन के झीलों से नित उसे गुजरते देखा।[6]
(गीत मरते नहीं–उषा–पृष्ठ संख्या–72)

डॉ० गोरख प्रसाद मस्ताना सीधी सरल भाषा के पैरोकार कवि है परन्तु अनायास उनकी रचनाओं में तत्सम शब्द चले ही आते है। जैसे:–

मैं भी बनूँ गगन, कोई अनिवार्य नहीं
हर्षित एक चमन, कोई अनिवार्य नहीं
देव शीश पर वह चन्दन सम दमक रहे
मैं भी बनूँ सुमन, कोई अनिवार्य नहीं।[7]
(गीत मरते नहीं–संतोष का सुख–पृष्ठ संख्या–73)

डॉ० गोरख प्रसाद मस्ताना के पास अच्छी शब्द संपदा है उनके पास पर्यायवाची शब्दों का भी भंडार है जिनके प्रयोग से वे अपनी रचनाओं में चमत्कार उत्पन्न कर देते हैं–

थोड़ी धूप चाहिए मुझको, तू पूरा दिनकर रखले
छाँह मुझे थोड़ी सी दे दे, तू पूरा तरुवर रख ले।
हो उल्लास तुम्हारे आँगन हर क्षण सुखद सवेरा हो
तुझे तमस छू भी ना पाए आलोकित पथ तेरा हो,
टिमटिम दो तारे मुझको दे, तू पूरा अंबर रख ले।[8]
(गीत मरते नहीं–लघुता–पृष्ठ संख्या–96)

डॉ० गोरख प्रसाद मस्ताना एक साथ रूढ़, यौगिक एवं योगरूढ़ शब्दों का प्रयोग करते हैं। जहाँ जिसकी जरूरत हो वही उन शब्दों का सार्थक प्रयोग करते हैं। जैसे:–

हम सत्य केतु ढ़ोने वाले, नित सदाचार पर लिखेंगे
हम प्रेम बीज बोने वाले बचपन दुलार पर लिखेंगे
तू दुर्विचार में रहो मगन हम सद्विचार पर लिखेंगे।[9]
(गीत मरते नहीं–हम लिखेंगे–पृष्ठ संख्या–100)

डॉ० गोरख प्रसाद मस्ताना की भाषा बड़ी सुंदर है। उन्होंने अधजल कलश, सत्य सनातन जैसे सुंदर–सुंदर पदों का प्रयोग किया है–

अधजल कलश छलकने लगता, सत्य सनातन बात है ये
पाया जिससे उसको धोखा और नहीं कुछ घात है ये
दंभ द्वेष जिस राग से झलके उसे कभी सुरमय मत करना।[10]
(गीत मरते नहीं–क्रय विक्रय–पृष्ठ संख्या–103)

डॉ० गोरख प्रसाद मस्ताना अपनी भाषा में तुकों का प्रयोग सुंदर ढंग से करते हैं जिससे उनकी कविताओं में एक सांगीतिक प्रभाव उत्पन्न हो जाता है।

पौध लगाया तूने ही क्यों काट रही
अपने ही आंगन से फिर क्यों छांट रही
बेटी हूँ पर कष्ट नहीं देने वाली
मैं तो हूँ माँ तेरा दुख हरने वाली
परंपरा माता महान, का सदा निभाना
मेरा दोष बताना माँ, फिर मुझे मिटाना।[11]
(गीत मरते नहीं–मेरा दोष बताना माँ–पृष्ठ संख्या 112)

डॉ० गोरख प्रसाद मस्ताना की कविताओं की भाषा तो सुंदर है ही उनके प्रबंध–काव्यों में भी भाषा की विविधता के दर्शन होते हैं 'तथागत' में विषय के अनुकूल भाषा परिवर्तित होती चलती है।

हे प्रकृति ! तू महाशक्ति कर प्रज्ञा का विस्तार
मिला मुझे अमिताभ मह प्रभुवर की कृपा अपार
मन में हो सिद्धार्थ सर्वदा भरना यही विचार
उनकी गाथा लिखने का होवे सपना साकार।[12]
(तथागत–सर्ग–1 पृष्ठ संख्या–17)

वे अपनी रचनाओं में कथानक के अनुसार शब्दों का चयन करते हैं। जैसे महात्मा बुद्ध के जीवन पर रचित तथागत में बौद्ध–दर्शन की शब्दावली दिखाई देती है जैसे सुद्ध, महाधर्म, चिंतन, पूर्ण भद्रता, अतुल श्रेष्ठता, ध्यान।

मन हो जाता शुद्ध बुद्ध की प्रतिमा ऐसी न्यारी
सुकर्म ही है महाधर्म, चिंतन करता सुविचारी
पूर्ण भद्रता, अतुल श्रेष्ठता, अतिशय मंगलकारी
ध्यान बुद्ध का धरते ही होता हरक्षण सुखकारी।[13]
(तथागत सर्ग–1–पृष्ठ संख्या–18)

जैसे ही डॉ० गोरख प्रसाद मस्ताना जनवादी कविताएँ लिखते हैं उनकी शब्दावली बदलने लगती है।

आजादी का अर्थ हमारे लिए मात्र दो रोटी है।
नमक प्याज भी दूर है इतने,ज्यों पर्वत की चोटी हैं।
स्वतंत्रता बस उनकी है
जो स्वर्ण सेज पे सोते
हम दीनों के दिन,तम की
जंजीर में बंध के रोते
यहाँ वही सबकुछ हैं जिसके देह की चमड़ी मोटी हैं।[14]
(रेत में फुहार–कैसी आजादी? पृष्ठ संख्या–57)

जब डॉ० गोरख प्रसाद मस्ताना प्राकृतिक सौंदर्य की कविता लिखते हैं तब उनकी भाषा बड़ी सरस और जीवंत हो जाती है। जैसे–चाँदनी द्वारा धरा के तन पर गजल लिखना, बसंती रंग में डूबी वसुधा का नवल होना।

चाँदनी लिखने लगी है धरा के तन पर ग़जल
काव्य मंजरियों में जब से, फाग अंखुआने लगा है,
रंग बसंती में डूबी, हो रही वसुधा नवल
देख यह सौंदर्य अनुपम, पवन भी गाने लगा है।[15]
(रेत में फुहार–फागुन–पृष्ठ संख्या–71)

डॉ० गोरख प्रसाद मस्ताना की रचनाओं की भाषा सौंदर्य युक्त होती है। उनके गीतों की पंक्तियाँ बहुत सुंदर है। इन पंक्तियों में वे अरूप को भी रूप दे देते हैं। जैसे–सावन की धरती के सौंदर्य का वर्णन करते हुए लिखते हैं–

सावन का सौंदर्य ओढ़ते क्या अवनी क्या अंबर
वसुधा लगे सुहागन हर्षित पल छीन लाता सूखकर,
रूप निहारे स्वयं प्रकृति हर ताल–तलइया दर्पण है।
आज धरा के कण कण में उल्लास और सम्मोहन है।[16]
(रेत में फुहार–सावन–पृष्ठ संख्या–80)

डॉ० गोरख प्रसाद मस्ताना अपनी कविताओं में छोटी–छोटी पंक्तियों से भी सौंदर्य बोध करा देते हैं:–

गंगा मन हो यमुना तन हो
हृदय गेह में वृंदावन हो
विष व्यापत ना, पल भर, जिसमें
मन में वह चंदन रख ले।[17]
(अक्षर अक्षर बोलेगा–रूप धन–पृष्ठ संख्या–22)

डॉ० गोरख प्रसाद मस्ताना की भाषा शैली कविताओं के विषय एवं कथ्य के अनुसार अपना रूप बदलती चलती है। भाषा की खनक देखें:–

किसलय से भी कोमल तन हो
पूजा घर से पावन मन हो
मुग्ध मुग्ध कर दे जो पल में
साँसों में वह संदल लिख।[18]
(अक्षर अक्षर बोलेगा–गीत–पृष्ठ संख्या–23)

डॉ० गोरख प्रसाद मस्ताना प्रचलित शब्दों का प्रयोग भी इतनी कुशलता से करते हैं कि उनमें भी नया अर्थ आ जाता है। यहाँ फूलों की खेती, स्नेह की सिंचाई,प्रीत की खाद, नेह का छिड़काव इत्यादि ऐसी ही प्रयोग है:–

चल करे, फूलों की खेती, सुगंधित मन प्राण हो
सुवासित कण कण धरा, सबके लिए वरदान हो
सिंचाई हो स्नेह की औ' खाद होवे प्रीत की
नेह के छिड़काव पर, खेती हो उत्तम गीत की
सांस के अंतिम शिखर तक, भाव में कल्याण हो।[19]
(अक्षर अक्षर बोलेगा–खेती फूलों की–पृष्ठ संख्या–27)

डॉ० गोरख प्रसाद मस्ताना की भाषा में मुहावरों और कहावतों की भरमार रहती है। यहां मन को मार लेना, जिंदा रह कर क्या करना, परछाई बन के रह जाना इत्यादि देखा जा सकता है:–

मन को मार लिया तो, जिंदा रह कर भी क्या पाओगे
मात्र दोपहर की परछाई, बनकर के रह जाओगे
जीवन, युद्ध अगर है तो नित उसे टकराना है
बूंद बूंद स्वेदो में अपने ईश्वर को पाना है
हार गए झंझा से तो फिर विजय–गान क्या गाओगे?[20]
(रेत में फुहार–जीवन युद्ध–पृष्ठ संख्या–7)

डॉ० गोरख प्रसाद मस्ताना की भाषा जगह–जगह नहीं हर जगह अपना सौंदर्य विखेरती चलती है। नैनों में सपनों का पलना, अभिलाषाएँ लेकर नगरों की ओर चलना, मोह द्वारा जीवन का टुकड़ों में बांटना इत्यादि प्रयोग भाषा को यहाँ जीवंत बना रहे हैं:–

नैनों में जब अनगिन इच्छाओं के सपने पले
लोग लिए अभिलाषाएँ, नगरों की ओर चले
मोह ने जीवन को टुकड़े–टुकड़े में बांट दिया
लोभ लालसा ने अपनी, मिट्टी से काट दिया
महानगर की चकाचौंध,में घिर गए लोग भले।[21]
(रेत में फुहार–अभिलाषा–पृष्ठ संख्या–14)

डॉ० गोरख प्रसाद मस्ताना शब्दों की पुनरावृत्ति से नाद–सौंदर्य उत्पन्न कर देते हैं। यहाँ पानी पानी लहरों लहरों का प्रयोग कैसा भाव प्रकट कर रहा है:–

पानी पानी लहरों लहरों पर पसरा सन्नाटा है
पता नहीं संस्कृति को अपने किस विषधर ने काटा है।
कहीं नहीं दो बोल नेह के
स्वर टूटा अपनेपन का
प्रेम मन के बिखर गए
हर तार हुआ सुना मन का
स्वार्थ भरे भाव ने ही हर आँगन आँगन बाटा है।[22]
(रेत में फुहार–शेष–पृष्ठ संख्या–17)

डॉ० गोरख प्रसाद मस्ताना भले प्रगतिशील विचारधारा के कवि हैं परंतु उनकी भाषा छायावादी संस्कारों से युक्त हैं:–

अनन्त पथ का महायात्री तू प्रज्ञा का व्यास
व्यष्टि मध्य में समष्टि बन, तू रहता सबके पास
लगे ज्यों हैं, नीला अकाश
तुझमें त्याग समर्पण मानो, पूर्व जन्म से आया
पीकर गरल शंभूसम तूने सुधा सिंधु सर सरसाया
प्यासा रहा स्वयं तू रहा मिटाता सबका त्रास
लगे ज्यों हैं, नीला अकाश।[23]
(रेत में फुहार–विश्वास–पृष्ठ संख्या–23)

डॉ० गोरख प्रसाद मस्ताना की भाषा शैली गीतों के अनुकूल है। उसमें गेयता, कोमलता है, सरलता है। उदाहरण देखें:–

प्रेम आग है प्रेम राग है यह प्रकृति की माया
प्रेम कामिनी, रक्षा बंधन हैं, ममता की छाया
बंद द्वार अंतश का खोलो तब होगा अनुमान
प्राण तू हो मेरे।[24]
(रेत में फुहार–मेरे प्राण–पृष्ठ संख्या–31)

डॉ० गोरख प्रसाद मस्ताना की भाषा में एक देसी सुगंध मिलती है, एक सोंधीं महक मिलती है। उदाहरण देखें:–

मेरे गाँव की माटी चंदन, जल है सुधा समान रे
कण–कण देवालय जस पावन सारा हिन्दुस्तान रे
सत्य अंहिसा की वसुधा यह, महात्याग का दर्शन
वीरो की है कर्मभूमि यह अमरों का क्रीड़ांगन
यहाँ जन्म लेने को अभिलाषी रहते भगवान रे।[25]
(गीत मरते नहीं–मिट्टी गाँव की–पृष्ठ संख्या–74)

डॉ० गोरख प्रसाद मस्ताना अपनी भाषा में प्रश्नवाचकता को भी धारण करते है, जिससे उनकी कविता और भी धारदार हो जाती है। उदाहरणार्थ:–

तिनका तिनका चुनकर सुख का, मन रे नीड़ बनाना क्या?
भावुकता की कोमल बाती बनकर दीप जलाना क्या?
मिला तुझे क्या गलकर जलकर अपना लहू पिलाकर
अपने स्वेद सुमन को उनके पथ में सजा सजाकर
चूम–चूमकर कौंधो की छत पे, उनको बैठाना क्या?[26]
(गीत मरते नहीं–क्यों–पृष्ठ संख्या–77)

डॉ० गोरख प्रसाद मस्ताना अपने गीतों में देशज शब्दों के प्रयोग से भी मोहकता उत्पन्न कर देते हैं। जैसे:–

बिछुआ का पाँवों से मिलना कंगना मिले कलाई से
नयनों से कजरा का मिलना यौवन का अंगड़ाई से।
खेल स्नेह का बड़ा जाइई बसंत से फूलों का
कजरी से बदरी का है, सावन से हैं झूलों का
कोल किलोल करें श्यामल धन, पावस में पुरवाई से[27]
(गीत मरते नहीं–नेह बंधन–पृष्ठ संख्या–81)

डॉ० गोरख प्रसाद मस्ताना की कविताओं में खड़ी बोली का प्रयोग ज्यादा हुआ हैं। खड़ी बोली में भी सरसता भर देना इनकी विशेषता हैं। उदाहरण के लिए:–

कर्णधारों देश के जागों निरेखों
राष्ट्र भ्रष्टाचार में औधा पड़ा है।
अनसुना है न्याय का आग्रह निरन्तर
शोषकों अन्यायियों का दल खड़ा है।[28]
(गीत मरते नहीं–कर्णधार–पृष्ठ संख्या–92)

डॉ० गोरख प्रसाद मस्ताना छोटे–छोटे वाक्यों का प्रयोग करते है और उससे अपनी कविता का प्रभाव–विस्तार कर लेते हैं। जैसे:–

धरा का श्रृंगार नारी, सृजन का आधार नारी
चरण देवल के सरिस है, स्वर्ग का है द्वार नारी
सिन्धु सम गंभीरता हैं
धरा जैसी धीरता है
हृदय हैं आकाश जैसे
वेणु वाणी मधुरता है
भाव ऊँचे हिमालय सम, स्नेह अमृत धार नहीं।[29]
(गीत मरते नहीं–नारी–पृष्ठ संख्या–94)

डॉ० मस्ताना एक ही कविता में भाषा के कई रूपों का प्रयोग करते हैं बडे, वाक्य छोटे वाक्य, अत्यंत छोटे वाक्य,सब मिलकर अद्‌भुत् प्रभाव उत्पन्न करते है।

छन्दों में जगवालों की पीड़ा झलके
बिम्बों में रस यथार्थ का पग–पग छलके
शिल्पों में गहरी चतुराई
रसों में नवरंगी परछाई
तब कविता लिख।[30]
(गीत मरते नहीं–काव्य चिंतन–पृष्ठ संख्या–30)

डॉ० गोरख प्रसाद मस्ताना की भाषा शैली अपने समय और समाज के सच को उजागर करने में पूर्णतः सक्षम हैं। विषय को स्पष्ट करनेवाली शब्दावली उनकी कविता की विशेषताएँ है:–

लाचारी बिमारी का घर, धरती का एक टुकड़ा गाँव
आभा विहिन मलिन मुखवाला निर्जन उखड़ा, उखड़ा गाँव।
खून पिघलकर बना पसीना तपती दो पहरी में
जीने वाले जी ही लेते पूस की शीतलहरी में
सदियों से गा रहा यहाँ पर
हलवालों का दुखड़ा गाँव।[31]
(गीत मरते नहीं–एक टुकड़ा गाँव–35)

डॉ० गोरख प्रसाद मस्ताना अपनी भाषा को लचकदार बनाकर रखते हैं जो कथ्य और उदेश्य के अनुसार 'अपनी' संरचना बदलती चलती है। सामाजिक न्याय की कविता में भाषा का रंग देखें:–

समय शूल का ताज मुझे, उसको फूलों की डाली लिख
कुबेर का धन उसे मुबारक, मुझको एक सवाली लिख।
किसलय सरिस अधर पर उसके,मधुरिम गीत विछा दे
स्नेह सिंधु की एक बूंद हित, भले मुझे तरसा दे
मरूस्थल का संतोष मुझे दे, पर उसको हरियाली लिख।[32]
(गीत मरते नहीं–पूनम की थाली–पृष्ठ संख्या–41)

डॉ० गोरख प्रसाद मस्ताना अपनी रचनाओं में शब्दों के कोने घीस कर प्रयोग करते हैं, जिससे रचनाओं में एक कोमलता और गेयता आ जाती है। उदाहरणार्थ:–

उम्मीदों का दीप जलाकर तम पथ में चल देना तुम
सींच रही है कड़ी धूप, लेकिन मीठे फल देना तुम
जिसने सारा जीवन तेरी किलकारी पर वारा हो
तेरी जीत निमित जिसने स्वयं अपना सब कुछ हारा हो
उसके हारे थके पाँव को, अपना संबल देना तुम[33]
(गीत मरते नहीं–नेकी–पृष्ठ संख्या–59)

इस प्रकार हम देखते है कि डॉ० गोरख प्रसाद मस्ताना की भाषा शैली समृद्ध है, सरस है,सौदर्य युक्त है मधुर है, काव्य रूपों के अनुकूल है। अतः कहा जा सकता है कि वे एक भाषा वैभव युक्त कवि हैं। उनकी भाषा तरसते नयनों को शीतलता प्रदान करनेवाली हरीतिमा की तरह है। अंत में एक और उदाहरण:–

धरती की सूखी अधरों को सरस बनाने आ बादल
नए छंद नवताल से रिमझिम का, स्वर गाने आ बादल
रवि रश्मियों की ज्वाला है जला रही तन मन को
छिन कर के उल्लास उदासी, बाँट रही उपवन को
बंजर और विरान बने हीय को हरसाने आ बादल[34]
(गीत मरते नहीं–आ बादल–पृष्ठ संख्या–63)

संदर्भ सूची

1. राग दरबारी, गीत मरते नहीं डॉ० गोरख प्रसाद मस्ताना, पृष्ठ–11. शारदा पुस्तक मंदिर, दिल्ली, प्रथम संस्करण–2014
2. चाह, उपरिवत्, पृष्ठ–21
3. रूप–चंदन, उपरिवत्, पृष्ठ–84,
4. पुरवाई, उपरिवत्, पृष्ठ–65
5. मधुसार चुरा लूँ मैं, उपरिवत्, पृष्ठ–68.
6. उषा, उपरिवत्, पृष्ठ–72.
7. संतोष का सुख, उपरिवत्, पृष्ठ–73
8. लघुता, उपरिवत्, पृष्ठ–96
9. हम लिखेंगे, उपरिवत्, पृष्ठ–100,
10. क्रय–विक्रय, उपरिवत्, पृष्ठ–103.
11. मेरा दोष बताना माँ, उपरिवत्, पृष्ठ–112.
12. तथागत, डॉ. गोरख प्रसाद मस्ताना, पृष्ठ–17,नवजागरण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2017
13. उपरिवत्, पृष्ठ–15.
14. कैसी आजादी? रेत में फुहार, डॉ० गोरख प्रसाद मस्ताना पृष्ठ–57, जे. बी. एस. पब्लिकेशंस इंडिया, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण–2016
15. फागुन, उपरिवत्, पृष्ठ–77
16. सावन, उपरिवत्, पृष्ठ–80
17. रुप–धन, अक्षर–अक्षर बोलेगा, डॉ० गोरख प्रसाद मस्ताना, पृष्ठ–22., नवजागरण प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2019
18. गीत, उपरिवत्, पृष्ठ–23.
19. खेती फूलों की, उपरिवत्, पृष्ठ–27
20. जीवन–युद्ध, रेत में फुहार, डॉ० गोरख मस्ताना,पृष्ठ–07, जे. बी. एस. पब्लिकेशन, इंडिया, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2016
21. अभिलाषा, उपरिवत्, पृष्ठ–14
22. शेष, उपरिवत्, पृष्ठ–17
23. विश्वास, उपरिवत्, पृष्ठ–23
24. मेरे प्राण, उपरिवत्, पृष्ठ–31
25. मिट्टी गाँव की, गीत मरते नहीं, डॉ० गोरख प्रसाद मस्ताना, पृष्ठ–74, शारदा पुस्तक मंदिर,दिल्ली, प्रथम संस्करण–2014
26. क्यों उपरिवत्, पृष्ठ–77
27. नेह बंधन, उपरिवत्, पृष्ठ–81.
28. कर्णधार, उपरिवत्, पृष्ठ–92
29. नारी, उपरिवत्, पृष्ठ–30
30. काव्य–चिंतन, उपरिवत्, पृष्ठ–30.
31. एक टुकड़ा गाँव–उपरिवत्, पृष्ठ–35,
32. पूनम की थाली, उपरिवत्, पृष्ठ–41.
33. नेकी, उपरिवत्, पृष्ठ–59.
34. आ बादल, उपरिवत्, पृष्ठ–63.